हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

विश्व पृथ्वी दिवस

बुधवार, 22 अप्रैल 2020, लखनऊ, पांच प्रदेश, 21 संस्करण, नगर संस्करण | www.livehindustan.com | वर्ष 25, अंक 94, 14 पेज, मूल्य ₹ 4.00 वैशाख कृष्ण पक्ष, अमावस्या, विक्रम सम्वत् 2077

कोरोना से लड़ाई

लॉकडाउन से धरती को मिली ऑक्सीजन, कम हुआ प्रदूषण

पृथ्वी दिवस

लखनऊ | रामेन्द्र प्रताप सिंह

पर्यावरण संरक्षण के लिए पिछले कई वर्षों से प्रयास हो रहे थे। ज्यादातर सिर्फ औपचारिक थे। कोरोना ने कहर बरपाया तो लोग घरों में कैद होने को मजबूर हो गए। सभी गतिविधियां ठप हो गईं।

पूरे विश्व को इससे आर्थिक नुकसान हुआ है पर एक बड़ा फायदा भी हो रहा है। धरती को नया जीवन मिल गया है। न सिर्फ हवा बल्कि पानी भी साफ हो गया है। चिड़ियों की चहचहाहट बढ़ गई है।

ये विचार विश्व धरती दिवस पर शहर के वैज्ञानिकों ने जाहिर किए। उनका कहना है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए 22 अप्रैल 1970 से पूरी दुनिया में पृथ्वी दिवस मनाया जा रहा है लेकिन हालत यह है कि विश्व के सबसे अधिक प्रदूषित 20-शहरों में भारत के 10 दस शहर शामिल हैं।

इसमें अकेले उत्तर प्रदेश के सात शहर लखनऊ, वाराणसी, कानपुर, गाजियाबाद, आगरा, नोएडा आदि शामिल हैं।

रिकॉर्ड स्तर पर कम हुआ प्रदूषणः कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए लॉकडाउन हुआ तो न सिर्फ सड़क पर वाहनों का चलन बंद हुआ बल्कि मानक के विपरीत चल रहीं तमाम फैक्ट्रियां भी बंद हो गई हैं। इससे वातारण काफी साफ हुआ। नतीजतन, लखनऊ का एक्यूआई 78 माइक्रोम प्रति घन मीटर हो गया जो अब तक अप्रैल माह में सबसे कम है। नाइट्रोजन डाइऑक्साइड जैसी प्रदूषणकारी गैसों में महत्वपूर्ण गिरावट आई। कार्बन डाइऑक्साइड जैसे वायु प्रदूषकों में 5 से 10 प्रतिशत की गिरावट हुई है। मीथेन उत्सर्जन में 35% गिरावट आई।

आज पृथ्वी दिवस है। मंगलवार को बच्चों ने छत पर रंगोली बनाई। फोटो: सुनील रैदास

22 अप्रैल 1970 से पृथ्वी दिवस मनाया जा रहा है

07 शहर यूपी के दुनिया के सबसे अधिक प्रदूषित शहरों में

78 माइक्रोम प्रति घन मीटर हुआ लखनऊ का एक्यूआई

वैज्ञानिक बोले

लॉकडाउन से प्रदूषण में अप्रत्याशित कमी आई है। आसपास चिड़िया भी दिखने लगी हैं। नदियो के पानी की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। **प्रो. भरत राज सिंह,** महानिदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज

जीवन जीने व कार्य की नई संस्कृति मिली है। इसे अपनाना होगा। ऐसी व्यवस्था बननी चाहिए जिससे सप्ताह में एक दिन लॉकडाउन जैसी स्थिति रहे। **प्रो. आलोक धवन,** निदेशक, आईआईटीआर

पिछले लगभग एक माह से चिड़ियों के चहकने और आसमान में तारों के स्पष्ट रूप से दिखने से तय है कि वातावरण बहुत स्वच्छ हो चुका है। **डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव,** पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीडीआरआई

लॉकडाउन से कई गतिविधियां बद हो चुकी हैं। पॉलीथिन का प्रयोग भी लगभग समाप्त है। बीमारियां भी कम हुई हैं। दुर्घटनाओं में में कमी आई है। **डॉ. अखिल आनंद,** पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीमैप